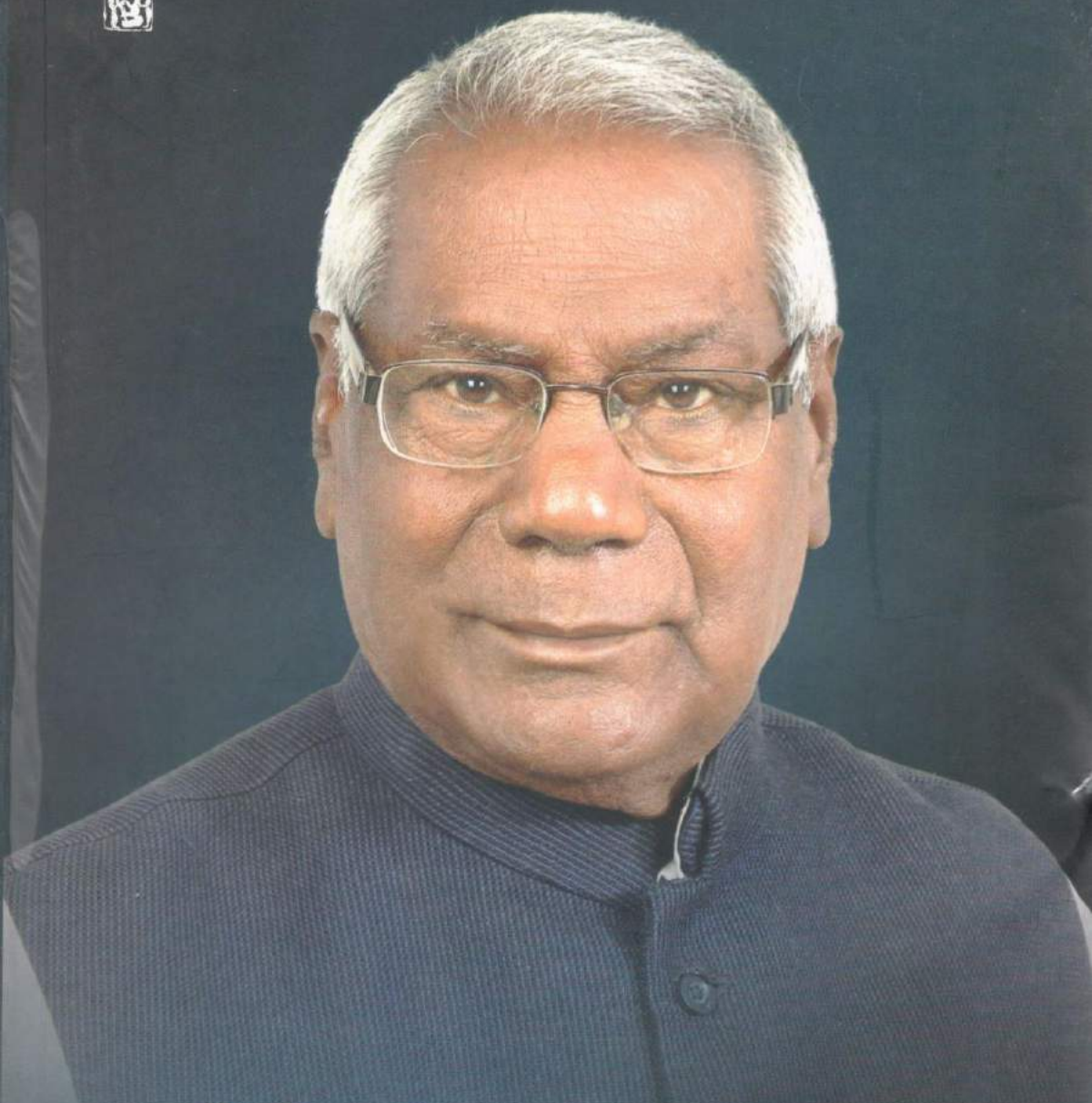




काली मिट्टी पर पारे की रेखा

सांस्कृतिक औदात्य के उपासक : कन्हैया सिंह

सम्पादक : नन्द किशोर पाण्डेय

लोकभारती प्रकाशन

पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग

प्रयागराज-211 001

वेबसाइट : www.lokbhartiprakashan.com

ईमेल : info@lokbhartiprakashan.com

शाखाएँ : 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज

नयी दिल्ली-110 002

अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने

पटना-800 006

36-ए, शेक्सपियर सरणी

कोलकाता-700 017

मूल्य : ₹ 1495

प्रथम संस्करण : 2020

© विनम्र सेन सिंह

ग्राफिक क्रिएशन्स प्रा.लि.

टैगोर टाउन, प्रयागराज द्वारा मुद्रित

KALI MITTI PAR PARE KI REKHA

Editor : Prof. Nand Kishore Pandey

Co-Editor : Dr. Vinamra Sen Singh

ISBN : 978-93-89742-78-7

26. सहजता का अमरत्व—संगीता श्रीवास्तव	124
27. एक पुरानी किताब है बाबा—विनम्र सेन सिंह	129
28. घर की बात :	
इन्द्रबहादुर सिंह, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, सुषमा सिंह, सुधा सिंह, श्रेया सिंह	137
29. बिनु गुरु जगत् को निरगुन पावा :	
सुभाष राय, हरeram सिंह, शिव कुमार यादव	141
30. ज्यों रहीम ये भोर :	
अशोक भगत, राजीव रंजन उपाध्याय, जे.एन. मिश्र, धनंजय चोपड़ा	144

खण्ड-2

सृजन-पर्व : विचार और वैभव का ताना-बाना

31. डॉ. कन्हैया सिंह का राहुल अनुशीलन—राजेन्द्र कुमार	151
32. राहुल का पुनर्मूल्यांकन : डॉ. कन्हैया सिंह—जय प्रकाश 'धूमकेतु'	155
33. राहुल सांकृत्यायन के झरोखे से : डॉ. कन्हैया सिंह—कैलाश देवी सिंह	159
34. डॉ. कन्हैया सिंह की राहुल विषयक दृष्टि—कुमार वीरेन्द्र	170
35. हरिऔध बाया डॉ. कन्हैया सिंह—बिनय षण्डगी राजाराम	179
36. हरिऔध बरास्ते डॉ. कन्हैया सिंह—अमरेन्द्र त्रिपाठी	185
37. स्वाधीन चेतना के निर्भीक कवि रामचरित उपाध्याय—जनार्दन	200
38. डॉ. कन्हैया सिंह की निबन्ध-दीर्घा—जयप्रकाश	207
39. सहज जीवन के शब्द-कलश—श्रीराम परिहार	216
40. मन की रिक्तता को भरते ललित निबन्ध—आद्या प्रसाद द्विवेदी	219
41. अवधारणा में पारम्परिकता और दृष्टि में नवीनता—सिद्धार्थ शंकर	222
42. काम की मंगल महिमा समझाते निबन्ध—हरीश कुमार शर्मा	230
43. ज्ञानात्मक और संवेदनात्मक चिन्तन-यात्रा—सत्यपाल शर्मा	240
44. निबन्धों में अटका हुआ मन—अचला पाण्डेय	251
45. संस्कृति संवाहक : डॉ. कन्हैया सिंह—अमृता	255
46. जिन्दगी के जिन्दा दस्तखत के कहानीकार—आशुतोष	261
47. पत्थर का मुस्कान : देश भक्ति और प्रेम की कहानियाँ—वशिष्ठ अनूप	270
48. रचनाकार की प्रतिकृति : 'पत्थर की मुस्कान'—श्यामनन्दन	275
49. सफर जो पन्नों में दर्ज है—अमितेश कुमार	285

खण्ड-3

भाषा पर्व : अक्षर-अक्षर भेद

50. पाठ-सम्पादन के सिद्धान्त और कन्हैया सिंह—लक्ष्मीकान्त वर्मा	293
51. हिन्दी पाठालोचन के विकास में डॉ. कन्हैया सिंह का योगदान—रामचन्द्र तिवारी	295
52. पाठालोचन के विश्वसनीय हस्ताक्षर : डॉ. कन्हैया सिंह—आनन्द प्रकाश दीक्षित	301
53. प्रखर समीक्षक : अनुभवी पाठ-सम्पादक—वासुदेव सिंह	305
54. डॉ. माताप्रसाद गुप्त की परम्परा में डॉ. कन्हैया सिंह—हरिमोहन मालवीय	309
55. वैज्ञानिक पाठानुसन्धान की अमूल्य धरोहर—योगेन्द्र प्रताप सिंह	313

ज़िन्दगी के ज़िन्दा दस्तख़त के कहानीकार

आशुतोष

(1)

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः।
उपत्स्यते ममु तु कोऽपि समानधर्मा
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी॥

(भवभूति, मालती माधव)

(2)

कहानियाँ सभ्यता की स्पष्ट आत्मप्रतिमा हैं। अपने समय और समाज में होनेवाले परिवर्तनों और प्रगति की कथा कहने में हिन्दी कहानी सक्षम रही है। सम्भव है कि अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण हिन्दी की गद्य विधाओं में कहानी को विशेष महत्त्व प्राप्त है। हिन्दी कहानी ने अपने आरम्भक दिनों में ही चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी 'उसने कहा था' (1915) के माध्यम से अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज करा दी थी। साथ ही उस कहानी को मिलनेवाली अपार लोकप्रियता ने यह तय कर दिया कि आगे के दिनों में आनेवाली हिन्दी कहानियों की दिशा क्या होगी। कहा जा सकता है कि 'उसने कहा था' कहानी ने ही हिन्दी कहानी के क्षेत्र में पहले-पहल यथार्थ का प्रवेश कराया। इसके बाद ही हिन्दी कहानी का एक विराट संसार आरम्भ होता है। बाद के दिनों में इसी कथा-संसार की अगुआई करते हुए हिन्दी कहानी को प्रेमचन्द मिले। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के माध्यम से अपने समय और समाज का वास्तविक चित्र उकेरा। उन्होंने गरीब, मजदूर, किसान, परिवार से सम्बन्धित उल्लेखनीय कहानियाँ देने के साथ ही तत्कालीन समाज की अन्याय समस्याओं, कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के खिलाफ एक रचनात्मक सत्याग्रह खड़ा कर दिया। प्रेमचन्द की कहानियों के माध्यम से ही पहली बार समाज और आधुनिक साहित्य के सृजनात्मक सम्बन्धों की नयी इबारतें प्रकट हुईं। चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी (उसने कहा था) से हिन्दी कहानी में यथार्थ का प्रवेश हुआ था, तो कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द की कहानियों के माध्यम से हिन्दी